Industrial-Psychology
B.A. Hons Part-III
Paper VII Group-(A)
By - Dr. Ramendra Kumar Singh
H.O.D. Psychology
D.K. College, Dumraon (Buxar)
VKSU, Ara

प्रश्न:- वैज्ञानिक प्रबन्धन से आप क्या समझते हैं? वैज्ञानिक प्रबन्धन में एफ० डब्लू टेलर के योगदानों का वर्णन करें। (Describe the Contribution of F. W. Taylor in Scientific-Management)

'वैज्ञानिक प्रबंधन,' औद्योगिक-उत्पादन का केन्द्र विन्दु है। इसका जन्मदाता अमेरीकन अभियंता एफ० डब्लू टेलर को माना जाता है। उन्होंने स्टील प्लांट में अपने सेवाकाल के दौरान यह महसूस किया कि कर्मचारियों की दोषपूर्ण कार्यप्रणाली से श्रम, समय, एवं शक्ति की बर्बादी होती है। परिणामत: उत्पादन में ह्रास होता है और कर्मचारियों में थकावट का आगमन अधिक होता है। इसका दुष्परिणाम यह होता है कि मालिक एवं मजदूर के सम्बन्धों में खटास आ जाती है और हड़ताल एवं तालाबंदी आदि का लगातार सिलसिला चल पड़ता है। एक दूसरा पहलू यह है कि मालिक कम खर्च में अधिक से अधिक उत्पादन लेना चाहता है, जबकि कामगार अधिक से अधिक वेतन पाने की लालसा रखता है।

मालिक एवं मजदूरों के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए एक संतुलित एवं कल्याणकारी व्यवस्था- प्रणाली विकसित की गई जिसे Scientific Management के नाम से जाना जाता है। टेलर ने यह अनुभव किया कि यदि कर्मचारियों की कार्य की गति को सही दिशा में लगाया जाए तो इन तमाम समस्याओं से निजात पाया जा सकता है। इसके लिए टेलर ने बौद्धिकरण आन्दोलन की शुरुआत की जिसे Time & Motion नाम दिया गया। इसके तहत उन्होंने एक ऐसी प्रणाली विकसित की जिसमें श्रमिकों को कम मेहनत लगानी पड़ती थी जिससे उन्हें थकान कम होने लगा और श्रमिक काम में दिलचस्पी लेने लगे। इससे उत्पादन में आशातीत वृद्धि हुई और मालिक ने मजदूरों की सुविधाएँ एवं मजदूरी बढ़ा दी।

Time एवं Motion की वैज्ञानिक व्याख्या

करते हुए ब्लम ने कहा है:-

"In time Study, the emphasis is on determining the standard time required to complete a task. In motion Studies, the methods, motions and movements of the worker are analysed."

इसी प्रकार Smith के अनुसार प्रत्येक कार्य की प्रत्येक क्रिया को करने में लगे समय को समय-अध्ययन (Time Study) कहा जाता है और एक कार्य को सम्पादित करने में जितनी गतियाँ (Movements) करनी पड़ती है उसे Motion Study कहा जाता है। इसका प्रमुख लक्ष्य कम से कम समय में अधिक से अधिक उत्पादन करना तथा कम से कम श्रम में अधिक से अधिक उत्पादन लक्ष्य को प्राप्त करना है। इसे Taylorism के नाम से भी जाना जाता है।

टेलर की वैज्ञानिक प्रबन्धन की मूल अवधारणाएँ:- टेलर द्वारा प्रतिपादित वैज्ञानिक प्रबन्धन मूलतः चार अवधारणाओं पर आधारित है:-

(1.) समय की मांग एवं बढ़ी आवश्यकता (जनसंख्या की आवश्यकता) की पूर्ति हेतु आधुनिक विधियों को अपनाना आवश्यक है। इसके लिए वैज्ञानिक पद्धति एवं वैज्ञानिक ढंग से निर्मित मशीनों को प्रयोग में लाया जाना चाहिए। इससे श्रम, समय एवं शक्ति तीनों की बचत होगी और उत्पादन में वृद्धि होगी। बेबकाक ने इस अवधारणा की व्याख्या करते हुए कहा है:-

"The development of a Science for each elements of a man's work is replace the old rule of thumb methods."

(2.) उद्योगों के लिये कर्मचारियों का चयन करते समय श्रमिकों की अभिरुचियों को विशेष रूप से ध्यान में रखना चाहिए। अभिरुचि के अनुसार काम सौंपना चाहिए और काम पर भेजने से पूर्व उन्हें पूर्णतः प्रशिक्षित करना आवश्यक है। किसी भी हालत में वैसे कर्मचारियों को नहीं चयनित किया जाना चाहिए जिनमे रुचि एवं लगन का अभाव हो। बेबाक के शब्दों में:-

"The Selection of the best work for each particular task followed by a programme for training the work man to replace the practice of following the worker to Select his own task and train himself as best he can."

③ मील मालिकों एवं मजदूरों के बीच आपसी, प्रेम, सौहार्द्र एवं भाईचारा बढ़ाने के लिये वैज्ञानिकों सिद्धान्तों को अपनाना चाहिए। मील मालिक कम खर्च में अधिक उत्पादन चाहता है और कर्मचारी अधिक वेतन चाहता है। अतः दोनों ही आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु आपसी संतुलन स्थापित करना आवश्यक है। वेबाक के शब्दों में :-

"The divis development of a spirit of hearty cooperation between the management and the man in carrying on their activities in accordance with the principles of the development Science."

(4) उद्योगों में कार्य वितरण वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित होनी चाहिये। प्रबन्धक एवं कर्मचारियों में काम के बँटवारा में किसी प्रकार की अनियमितता नहीं होनी चाहिए, बल्कि समान वितरण प्रणाली को अपनाना श्रेयस्कर होता है। निपुण कामगारों को तरजीह दी जानी चाहिए। इस संदर्भ में वेबाक का कहना है। -

"The devision of work to almost equal shares between the management and the workers' each development taking over the work for which it is better fitted as suitable substitute for the condition in which almost all the work and the greater part of the responsibility will be thrown on the man."

टेलर की वैज्ञानिक प्रबन्धन की सिद्धान्त का कारखाना में लोहा ढोने वाले श्रमिकों पर किया गया। उन्होंने पाया कि जो श्रमिक पूरे केवल 12.5 टन लोहा ढोते थे वैज्ञानिक प्रबन्धन का इस्तेमाल करने पर 47.5 टन लोहा ढोने लगे। इस प्रकार कारखाना में अधिक उत्पादन हुआ और श्रमिकों का वेतन बढ़कर 1.85 डालर हो गया उत्पादन में 280% की वृद्धि हुई। मील मालिकों को 6 महीने में 75000 से लेकर 80000 शिलिंग तक लाभ हुआ।

टेलर ने इन सफलताओं को वैज्ञानिक रूप देने के लिए तीन बातों पर जोर दिया :—

(3) मील मालिकों एवं मजदूरों के बीच आपसी, प्रेम, सौहार्द एवं भाईचारा बढ़ाने के लिये वैज्ञानिकों सिद्धान्तों को अपनाना चाहिए। मील मालिक कम खर्च मे अधिक उत्पादन चाहता है और कर्मचारी अधिक वेतन चाहता है। अतः दोनों ही आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु आपसी संतुलन स्थापित करना आवश्यक है। बेबाक के शब्दों में :-

"The ~~divis~~ development of a spirit of hearty cooperation between the management and the man in carrying on their activities in accordance with the principles of the development science."

(4) उद्योगों में कार्य वितरण वैज्ञानिक पद्धति पर आधारित होनी चाहिये। प्रबन्धक एवं कर्मचारियों में काम के बँटवारा में किसी प्रकार की अनियमितता नहीं होनी चाहिए, बल्कि समान वितरण प्रणाली को अपनाना श्रेयस्कर होता है। निपुण कामगारों को तरजीह दी जानी चाहिए। इस संदर्भ मे बेबाक का कहना है। -

"The devision of work to almost equal shares between the management and the workers' each development taking over the work for which it is better fitted as ~~suitable~~ sustitute for the condition in which almost all the work and the greater part of the responsibility will be thrown on the man."

टेलर की वैज्ञानिक प्रबन्धन की सिद्धान्त का कारखाना में लोहा ढोने वाले श्रमिकों पर किया गया। उन्होने पाया कि जो श्रमिक पहले केवल 12.5 टन लोहा ढोते थे वैज्ञानिक प्रबन्धन का इस्तेमाल करने पर 47.5 टन लोहा ढोने लगे। इस प्रकार कारखाना में अधिक उत्पादन हुआ और श्रमिकों का वेतन बढ़कर 1.85 डालर हो गया। उत्पादन में 280% की वृद्धि हुई। मील मालिकों को 6 महीने में 75000 से लेकर 80000 शिलिंग तक लाभ हुआ।

टेलर ने इन सफलताओं को वैज्ञानिक रुप देने के लिए तीन बातों पर जोर दिया :—

1.) टेलरवाद के अनुसार कार्य के दौरान श्रमिकों को विश्राम मिलना चाहिए इससे श्रमिकों की थकावट दूर होती है और तरोताजा होकर काम करते हैं। विश्राम की मात्रा काम के स्वरूप के हिसाब से निर्धारित होना चाहिए।

2.) मील मालिक एवं श्रमिकों का सम्बन्ध प्रेमपूर्वक और सौहार्दपूर्ण होना चाहिए जिससे निकटता एवं अपनापन का भाव विकसित हो।

3.) वैज्ञानिक प्रबन्धन तभी संभव या फलीभूत होगा जब कर्मचारी एवं कार्य पर नियंत्रण बना रहेगा।

समालोचना :-

निसंदेह टेलर द्वारा प्रतिपादित टेलरवाद या सिद्धान्त औद्योगिक क्षेत्र में एक क्रान्तिकारी देन है। इसने उद्योग एवं उद्योगपतियों तथा श्रमिकों के जीवन एवं कार्यप्रणाली को बदल डाली। तथापि कर्मचारियों की तुलना में मील मालिकों के लिये ज्यादा लाभप्रद साबित हुआ। मजदूरों का जीवन मशीन की तरह हो गया। इसीलिए कर्मचारी एवं कर्मचारी यूनियनों द्वारा आगे चलकर इसका विरोध होना प्रारम्भ हुआ। फ्रैंक गिलब्रेथ पति पत्नी ने इस क्षेत्र में सुधार लाने का प्रयास किया और मनोवैज्ञानिक पक्ष एवं वैज्ञानिक पक्ष के बीच सामंजस स्थापित करने का प्रयास किया। इस प्रबन्ध सिद्धान्त पर Bluum ने बड़ा ही सटीक टिप्पणी की है।—

"Taylor represents those who believe that the average workman is dull and has no interests excepts earning money; but that he is so stupid that earning to much is bad for him; therefore management is protecting him by keeping his salary increases small."

R.S. Singh
10.07.2020
D.K. College, Dumraon
(Buxar)